卐 श्री वीतरागाय नमः 卐

विशद
कर्मदहन विधान
का माण्डला

रचयिता :

प.पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति – विशद कर्मदहन विधान

कृतिकार – प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण – प्रथम, 2009

प्रतियाँ – 1000

संकलन – मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज एवं
क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज, ब्र. सुखनन्दनजी, ब्र. लालजी भैया

संपादन – ब्र. ज्योति दीदी, आस्था दीदी, सपना दीदी

संयोजन – ब्र. सोनू, किरण, आरती दीदी ● मो.: 9829127533

सम्पर्क सूत्र – 9829076085 (ज्योति दीदी)

प्राप्ति स्थल – 1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008
2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
बरौदिया कलाँ, जिला-सागर (म.प्र.) फोन : 07581-274244
3. विवेक जैन, 2529, मालपुरा हाऊस,
मोतिसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर
फोन : 2503253, मो.: 9414054624
4. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार, ए-107, बुध विहार, अलवर
मो.: 9414016566
5. सरस्वती प्रिंटर्स एवं स्टेशनर्स, चाँदी की टकसाल, जयपुर

मूल्य – पुनः प्रकाशन हेतु 21/- रु. मात्र

:- अर्थ सौजन्य :-

श्री संभवनाथ दि. जैसवाल जैन मंदिर श्योपुर में
श्री मज्जिनेन्द्र पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव
दिनांक 10 फरवरी से 15 फरवरी 2009 तक
पावन सान्निध्य :
प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज,
मुनि श्री विशालसागरजी, क्षुल्लक श्री विदर्शसागरजी के अवसर पर प्रकाशित

मुद्रक : **राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह),** जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

कृति – विशद कर्मदहन विधान

कृतिकार – प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण – प्रथम, 2009

प्रतियाँ – 1000

संकलन – मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज एवं
क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज, ब्र. सुखनन्दनजी, ब्र. लालजी भैया

संपादन – ब्र. ज्योति दीदी, आस्था दीदी, सपना दीदी

संयोजन – ब्र. सोनू, किरण, आरती दीदी ● मो.: 9829127533

सम्पर्क सूत्र – 9829076085 (ज्योति दीदी)

प्राप्ति स्थल –
1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008
2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
बरौदिया कलाँ, जिला-सागर (म.प्र.) फोन : 07581-274244
3. विवेक जैन, 2529, मालपुरा हाऊस,
मोतिसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर
फोन : 2503253, मो.: 9414054624
4. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार, ए-107, बुध विहार, अलवर
मो.: 9414016566
5. सरस्वती प्रिंटर्स एवं स्टेशनर्स, चाँदी की टकसाल, जयपुर

मूल्य – पुनः प्रकाशन हेतु 21/- रु. मात्र

:- अर्थ सौजन्य :-

श्री ज्ञानस्वरूप नितिन कुमार गंगवाल

तुषार विला, आदिनाथ कॉलोनी, खादीग्राम रोड़, गुलाबपुरा, निवासी - भीलवाड़ा

मुद्रक : **राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह),** जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

आराध्य के प्रति अर्चना

नर भव पाया रत्न अमौलिक, विषयों में खोता।
भोगों में अनुराग लगा जो, अतिचार होता।।

जो भी जीव इस संसार में एकेन्द्रियादि स्थावर से लेकर संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव तक सभी लगे हुए अनादिकालीन कर्मों के कारण ही जन्म-मरण आदि के दुःखों को पाते हैं और वह 8 कर्मों की 148 उत्तर प्रकृतियों के वशीभूत होकर तथा प्राप्त इन्द्रिय के विषय में आसक्त होकर मिथ्यात्वी एवं राग-द्वेष की क्रियाओं को अपनी प्रवृत्ति में ले लेता है और इस प्रकार उन कर्मों के उदय आने पर नाना नई-नई संसारी पर्यायों को धारण करता रहता है। इन पर्यायों में पहुँचकर चाहे वह मनुष्य, देव, तिर्यञ्च एवं नरक गति की आयु का बंध कर वह उतने समय वहाँ रहकर वहाँ के असहनीय दुःखों को सहता रहता है। इस प्रकार से कर्मों का यह चक्र जब तक बन्ध, उदय, सत्त्व में रहता है तब तक यह जीव इस अनादि संसार में भ्रमण करता रहता है।

इस अनादि संसार में रहते प्राणी को अपने कर्मों से छुटकारा पाने के लिए आचार्य श्री समन्तभद्र स्वामी ने र.श्रा. में बताया है-

गृह कर्मणापि निचितं, कर्म विमार्ष्टि खलु गृह विमुक्तानाम।
अतिथिनां प्रतिपूजा, रुधिर मलं धावते वारि।।

देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति, पूजा आदि की जाती है और उसके गृहस्थ कार्यों के आरम्भ परिग्रह के कार्य से जो कर्म का बन्ध होता है, उससे छुटकारा पाने के लिए प्रभु की भक्ति ही सहारा है। अतः प्रभु की भक्ति का सहारा जो परम पूज्य आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज ने अपने भक्तिमय शब्दों के माध्यम से हमें प्रदान किया है। उसके हम सभी भक्तगण गुरुदेव के चरणों में शत्-शत् नमन करते हैं।

लगे कर्मों ने जीवों पर, हमेशा ही सितम ढाया।
नहीं कोई भी इस जग में, लगे कर्मों से बच पाया।।
करे जो अर्चना प्रभु की, बचे वह कर्म से प्राणी।
भक्त शुभ पुष्प मुक्ति के, चरणों में साथ यह लाया।।

कर्मदहन-विधान के उपवास और जाप की विधि

कर्म के मूल भेद 8 हैं। उत्तरभेद 148 हैं। इनका दहन (नाश) करना हर भव्य आत्मा का कर्त्तव्य है। उस दहन की विधि तपस्या करना है, अनशन आदि तप करने से आत्मा में कषायों का नाश हो शांति और सुख का अनुभव होता है तथा आत्मा धीरे-धीरे कर्मबंधन से मुक्त हो सिद्ध हो जाता है, इसीलिये कर्म की 148 प्रकृति को नष्ट करने के लिये 148 तथा अनन्त गुणों के साथ सिद्धों के मुख्य आठ गुण प्राप्त करने के लिये 8 इस प्रकार कुल 156 उपवास करना चाहिये।

ये उपवास जिस गुण-स्थान में जितनी कर्म-प्रकृतियों का नाश होता है, उसी गुण-स्थान की संख्या वाली तिथियों में कर्म-प्रकृतियों की संख्या के हिसाब से करना चाहिये। जैसे चौथे गुण-स्थान में सात प्रकृतियों का नाश होता है तो चौथे नग 7 में (हर चौथ को एक) कुल सात उपवास करना चाहिये। अर्थात्- क्रम से चौथ के 7, सप्तमी के 3, नवमी के 36, दशमी का 1, बारस के 16, चौदश के 85 इस तरह 148 तथा अष्टमी के 8 कुल मिलाकर 156 तिथियों में उपवास करना चाहिये।

इस तरह तीन साल साढ़े छह मास में यह व्रत पूर्ण होता है। हर एक उपवास के दिन भिन्न-भिन्न मन्त्रों की जाप (1 माला या 108 बार) देना चाहिये। जैसा कि आगे कहा गया है।

व्रत पूर्ण हो जाने के बाद उत्साहपूर्वक शक्ति के अनुसार उद्यापन करना चाहिये। श्री जिन मन्दिर जी में उपकरण और पात्रों को चार प्रकार का दान देना चाहिये। मण्डल माड़कर पूजा करना और आगे के लिये धर्माराधना की प्रतिज्ञा करना चाहिये।

मांडना बनाकर ही विधान करना चाहिये।

चौथ के 7 उपवास के 7 मन्त्र :-

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं सम्यक्मिथ्यात्व-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं सम्यक्प्रकृति-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी क्रोध-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी मान-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी माया-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी लोभ-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

सप्तमी के 3 उपवास के 3 मन्त्र :-

ॐ ह्रीं नरकायुष्कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं तिर्यग्गायुष्कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं मनुष्यायुष्कर्मरहित सिद्धाय नमः।

नवमी के 36 उपवास के 36 मन्त्र :-

ॐ ह्रीं निद्रानिद्रा-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं प्रचलाप्रचला-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धि-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं नरकगतिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं तिर्यग्गतिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्वीनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं तिर्यग्गत्यानुपूर्वीनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं एकेन्द्रियनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं स्थावरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं आतपनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं उद्योतनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं परघातनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं सूक्ष्मनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणक्रोध-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमान-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणमाया-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणलोभकर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणक्रोध-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमान-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणमाया-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरणलोभ-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं स्त्रीवेद-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं पुरुषवेद-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं नपुंसकवेद-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं हास्य-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं रति-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं अरति-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं शोक-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं भय-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं जुगुप्सा-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं संज्वलन क्रोध-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं संज्वलन मान-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं संज्वलन माया-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

दशमी के उपवास का 1 मन्त्र :-

ॐ ह्रीं संज्वलन लोभ-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

बारस के 16 उपवास के 16 मन्त्र :-

ॐ ह्रीं निद्रा-दर्शनावरण-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं प्रचला-दर्शनावरण-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं मतिज्ञानावरण-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानावरण-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं अवधिज्ञानावरण-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञानावरण-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं केवलज्ञानावरण-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं चक्षुदर्शनावरण-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं अचक्षुदर्शनावरण-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरण-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं दानान्तराय-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं लाभान्तराय-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं

उपभोगान्तराय-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं औदारिकशरीरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः।

चौदश के 85 उपवासों के 85 मन्त्र :-

ॐ ह्रीं वैक्रियकशरीरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं आहारकशरीरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं तैजसशरीरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं कार्माणशरीरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं औदारिकबन्धननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं वैक्रियकबन्धननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं आहारकबन्धननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं तैजसबन्धननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं कार्माणबन्धननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं औदारिकसंघातनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं वैक्रियकसंघातनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं आहारकसंघातनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं तैजससंघातनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं कार्माणसंघातनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं औदारिकांगोपांगनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं वैक्रियकांगोपांगनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं आहारकांगोपांगनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थाननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थान-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं स्वातिसंस्थाननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं वामनसंस्थाननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं कुब्जकसंस्थाननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं हुण्डकसंस्थाननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहनन-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं बज्रनाराचसंहनन-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं नाराचसंहनननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं अर्धनाराचसंहनननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं कीलकसंहनननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं असंप्राप्तासृपाटिका-संहनननाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं श्यामवर्णनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं हरितवर्णनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं पीतवर्णनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं

अरुणवर्णनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं श्वेतवर्णनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं तिक्तरसनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं कटुकरसनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं मधुरसनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं आम्लरसनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं कषायरसनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं मृदुस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं कठोरस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं शीतस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं उष्णस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं रूक्षस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं स्निग्धस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं गुरूस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं लघुस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं सुगन्धनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं दुर्गन्धनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं देवगत्यानुपूर्वीनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं मनुष्यगत्यानुपूर्वीनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं प्रत्येकशरीरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं साधारणशरीरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं पर्याप्तिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं अपर्याप्तिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं दुर्भगनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं सुभगनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं आदेयनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं अनादेयनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं अगुरुलघुनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं उपाघातनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं उच्छ्वासनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं शुभविहायोगतिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं अशुभविहायोगतिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं स्थिरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं अस्थिरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं शुभनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं अशुभनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं सुस्वरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं दुःस्वरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं अयशकीर्ति-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं यशकीर्ति-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं निर्माणनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं देवगतिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं मनुष्यगतिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः। ॐ ह्रीं पञ्चेन्द्रियजातिनाम-कर्मरहित

सिद्धाय नमः । ॐ ह्रीं त्रसनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः । ॐ ह्रीं बादरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः । ॐ ह्रीं सूक्ष्मनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः । ॐ ह्रीं तीर्थंकरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नमः । ॐ ह्रीं असातावेदनीय-कर्मरहित सिद्धाय नमः । ॐ ह्रीं सातावेदनीय-कर्मरहित सिद्धाय नमः । ॐ ह्रीं देवायुष्क-कर्मरहित सिद्धाय नमः । ॐ ह्रीं नीचगोत्र-कर्मरहित सिद्धाय नमः । ॐ ह्रीं उच्चगोत्र-कर्मरहित सिद्धाय नमः ।

इस प्रकार 148 कर्मप्रकृतियों का क्षयकर आत्मा मोक्ष चली जाती है फिर वह संसार में कभी नहीं आती । मुक्त आत्मा को सिद्ध कहते हैं । सिद्ध अवस्था में उसके अनन्तगुण प्रगट होते हैं । उनमें आठ गुण मुख्य हैं । इन आठ गुणों के लिये अष्टमी के आठ उपवास करना चाहिये । प्रत्येक दिन क्रम से नीचे लिखे आठ मन्त्रों का जाप देना चाहिये ।

अष्टमी के 8 उपवास के 8 मन्त्र :-

ॐ ह्रीं अनन्तसम्यक्त्व-गुणसहित सिद्धाय नमः । ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन-गुणसहित सिद्धाय नमः । ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान-गुणसहित सिद्धाय नमः । ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य-गुणसहित सिद्धाय नमः । ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व-गुणसहित सिद्धाय नमः । ॐ ह्रीं अवगाहनत्व-गुणसहित सिद्धाय नमः । ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्व-गुणसहित सिद्धाय नमः । ॐ ह्रीं अव्याबाधत्व-गुणसहित सिद्धाय नमः ।

***

_W°H

नहीं थी कल्पना जिसकी, करिश्मा कर दिखाया है।
हरेक इंसान ने भगवान, को भी आजमाया है।।
गुरु की ही कृपा का फल, यहाँ पर आज बैठे हम।
गुरु के पाक चरणों में, अतः ये शीश नाया है।।

श्री देव-शास्त्र-गुरु समुच्चय पूजन

स्थापना

देव शास्त्र गुरु के चरणों हम, सादर शीष झुकाते हैं।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध प्रभु को ध्याते हैं।
श्री बीस जिनेन्द्र विदेहों के, अरु सिद्ध क्षेत्र जग के सारे।
हम विशद भाव से गुण गाते, ये मंगलमय तारण हारे।
हमने प्रमुदित शुभ भावों से, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।
मम् डूब रही भव नौका को, जग में वश एक सहारा है।
हे करुणा कर ! करुणा करके, भव सागर से अब पार करो।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन ।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अष्टक

हम प्रासुक जल लेकर आये, निज अन्तर्मन निर्मल करने।
अपने अन्तर के भावों को, शुभ सरल भावना से भरने।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे नाथ ! शरण में आये हैं, भव के सन्ताप सताए हैं।
यह परम सुगन्धित चंदन ले, प्रभु चरण शरण में आये हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह भव ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय निधि को भूल रहे, प्रभु अक्षय निधी प्रदान करो।
यह अक्षत लाए चरणों में, प्रभु अक्षय निधि का दान करो।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यद्यपि पंकज की शोभा भी, मानस मधुकर को हर्षाए।
अब काम कलंक नशाने को, मनहर कुसुमांजलि ले आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये षट् रस व्यंजन नाथ हमें, सन्तुष्ट पूर्ण न कर पाए।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चरण में हम लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक के विविध समूहों से, अज्ञान तिमिर न मिट पाए।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, हम दीप जलाकर ले आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये परम सुगंधित धूप प्रभु, चेतन के गुण न महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, हम धूप जलाने को आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन तरु में फल खाए कई, लेकिन वे सब निष्फल पाए।
अब विशद मोक्ष फल पाने को, श्री चरणों में श्री फल लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म आवरणों के, आतंक से बहुत सताए हैं।
वसु कर्मों का हो नाश प्रभु, वसु द्रव्य संजोकर लाए हैं।।

श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

श्री देव शास्त्र गुरु मंगलमय हैं, अरु मंगल श्री सिद्ध महन्त।
बीस विदेह के जिनवर मंगल, मंगलमय हैं तीर्थ अनन्त।।

छन्द तोटक

जय अरि नाशक अरिहंत जिनं, श्री जिनवर छियालिस मूल गुणं।
जय महा मदन मद मान हनं, भवि भ्रमर सरोजन कुंज वनं।।
जय कर्म चतुष्टय चूर करं, दृग ज्ञान वीर्य सुख नन्त वरं।
जय मोह महारिपु नाशकरं, जय केवल ज्ञान प्रकाश करं।।1 ।।
जय कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनं, जय अकृत्रिम शुभ चैत्य वनं।
जय ऊर्ध्व अधो के जिन चैत्यं, इनको हम ध्याते हैं नित्यं।।
जय स्वर्ग लोक के सर्व देव, जय भावन व्यन्तर ज्योतिषेव।
जय भाव सहित पूजे सु एव, हम पूज रहे जिन को स्वयमेव।।2।।
श्री जिनवाणी ओंकार रूप, शुभ मंगलमय पावन अनूप।
जो अनेकान्तमय गुणधारी, अरु स्याद्वाद शैली प्यारी।।
है सम्यक् ज्ञान प्रमाण युक्त, एकान्तवाद से पूर्ण मुक्त।
जो नयावली युत सजल विमल, श्री जैनागम है पूर्ण अमल।। 3।।
जय रत्नत्रय युत गुरूवरं, जय ज्ञान दिवाकर सूरि परं।
जय गुप्ति समीती शील धरं, जय शिष्य अनुग्रह पूर्ण करं।।
गुरु पञ्चाचार के धारी हो, तुम जग-जन के उपकारी हो।
गुरु आतम ब्रह्म विहारी हो, तुम मोह रहित अविकारी हो।।4।।

जय सर्व कर्म विध्वंस करं, जय सिद्ध सिला पे वास करं।
जिनके प्रगटे है आठ गुणं, जय द्रव्य भाव नो कर्महनं।।
जय नित्य निरंजन विमल अमल, जय लीन सुखामृत अटल अचल।
जय शुद्ध बुद्ध अविकार परं, जय चित् चैतन्य सु देह हरं।।5।।
जय विद्यमान जिनराज परं, सीमंधर आदी ज्ञान करं।
जिन कोटि पूर्व सब आयु वरं, जिन धनुष पांच सौ देह परं।।
जो पंच विदेहों में राजे, जय बीस जिनेश्वर सुख साजे।
जिनको शत् इन्द्र सदा ध्यावें, उनका यश मंगलमय गावें।।6।।
जय अष्टापद आदीश जिनं, जय उर्जयन्त श्री नेमि जिनं।
जय वासुपूज्य चम्पापुर जी, श्री वीर प्रभु पावापुरजी।।
श्री बीस जिनेश सम्मेदगिरी, अरु सिद्ध क्षेत्र भूमि सगरी।
इनकी रज को सिर नावत हैं, इनको यश मंगल गावत हैं।।7।।

(आर्या छन्द)

पूर्वाचार्य कथित देवों को, सम्यक् वन्दन करें त्रिकाल।
पञ्च गुरू जिन धर्म चैत्य श्रुत, चैत्यालय को है नत भाल।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिभ्यो विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीन लोक तिहुँ काल के, नमू सर्व अरहंत।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाऊँ भव का अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक एवं त्रिकाल वर्ती तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य शुभ, चैत्यालय मनहार।
शत इन्द्रों से पूज्य हैं, हम पूजें शुभकार।।

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्यालय सम्बन्धि जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पांजलि क्षिपेत् (कायोत्सर्ग.....)

अथ सिद्ध स्तुति

सोरठा- अचल अधिष्ठित श्रेष्ठ, पुरुषार्थी तव पद नमन्।
सिद्ध भट्टारक ज्येष्ठ, निष्ठितार्थ हे निरञ्जन्।।1।।

स्व प्रदाय पद दाय, अचल आपके पद नमन्।
अक्षय अव्याबाध, तुमको वन्दन हम करें।।2।।

हे अनन्त विज्ञान ! दृष्टि, वीर्य सुखप्रद नमो।
करूँ आपका ध्यान, नीरज निर्मल तव चरण।।3।।

नमूँ तुम्हें अच्छेद्य, अप्रमेय अक्षय तुम्हीं।
ध्यायूँ प्रभो अभेद्य, मन-वच-तन से आपको।।4।।

गौरव लाघव वान, अगर्भवास तव पद नमन्।
हे अक्षोभ्य गुणवान !, अविलीन तुमको नमूँ।।5।।

नमूँ परम काष्ठात्म, योग रूपधारी परम।
अनन्त गुणाश्रय आत्म, लोकाग्रवासी पद नमन।।6।।

सिद्ध अधिष्ठित निष्ठ, हे अशेष पुरुषार्थी !
भूरि-भूरि विशिष्ठ, सिद्ध भट्टारक पद नमन्।।7।।

(शम्भू छन्द)

सब तत्त्वार्थ बोध के धारी, विविध दुरित हे शुद्धीवान्।
युक्ति शास्त्र अवरुद्ध आप हो, हे समृद्ध परम सुखवान।।

बहुविध गुण वृद्धिधारी हे, सर्वलोक में आप प्रसिद्ध।
विशद भाव से स्तुति करते, प्रमित सुनय जो हुए हैं सिद्ध।।8।।

।। इति सिद्ध भक्ति विधानम्।। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

कर्मदहन पूजन

स्थापना

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध सनातन, सिद्ध शिला के अधिकारी।
अष्टकर्म हैं दुःखकर जग में, नाश किए तुम अविकारी।।
इन कर्मों ने हमें सताया, भ्रमण कराया है संसार।
पञ्च परावर्तन कीन्हा है, मिला नहीं तव पद आधार।।
शरणागत बनकर हम आए, राह दिखाओ हमको नाथ।
तव गुण पाने है आह्वानन, प्रभु निभाओ मेरा साथ।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्म निवारणार्थ श्री सिद्ध परमेष्ठी जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

(तर्ज - कुण्डलिया)

ज्ञानावरणी कर्म न, होने देवे ज्ञान।
नाश हेतु उस कर्म के, करते तव गुणगान।।
करते तव गुणगान, नाश हो जन्म-जरादि।
चढ़ा रहे हम नीर, मिटे मम आधि व्याधि।।
पूजा करने भाव से, आये हम हे नाथ !
हमको भी ले लीजिए, सिद्ध शिला पर साथ।।
प्रभु जय-जय हो तुम्हारी।
मैटो मम् अज्ञान, शरण में खड़े पुजारी।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्मविनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावर्ण से, दर्शन का अवरोध।
हो न पावे जीव को, निज के गुण का बोध।।
निज के गुण का बोध, नहीं हो पावे भाई।
निज में हमने न अब तक, शीतलता पाई।।

चन्दन शीतलगार के, चढ़ा रहे हम नाथ!
भव आताप विनाश में, दो प्रभु मेरा साथ।।
प्रभु जय-जय हो तुम्हारी।
मैटो मम् अज्ञान, शरण में खड़े पुजारी।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्मविनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख-दुख का वेदन करें, जग में जो भी जीव।
वेदनीय यह कर्म है, देवे दुःख अतीव।।
देवें दुःख अतीव, जिह्वा से कहे न जावें।
योनि लाख चौरासी में, फिर-फिर कर पावें।।
अक्षय अक्षत थाल में, भर लाए हे नाथ!
अक्षय पद पाने प्रभु, दीजे मेरा साथ।।
प्रभु जय-जय हो तुम्हारी।
मैटो मम् अज्ञान, शरण में खड़े पुजारी।।3।।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्मविनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय मोहित करे, भ्रमण करावे लोक।
स्वजन मिलें तब हर्ष हो, दुर्जन पावें शोक।।
दुर्जन पावें शोक, कहे सुत भगनी भाई।
कामाग्नि में झुलसे, निज की सुधि बिसराई।।
लेकर आए पुष्प हम, परम सुगन्धित नाथ!
कामबाण विध्वंश हो, चरण झुकाते माथ।।
प्रभु जय-जय हो तुम्हारी।
मैटो मम् अज्ञान, शरण में खड़े पुजारी।।4।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्मविनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु कर्म से जीव यह, होता नहीं स्वतंत्र।
चतुर्गति में डालकर, कर देता परतंत्र।।

कर देता परतंत्र, नरक नर-सुर-पशु होते।
होते गति आधीन, स्वयं की शक्ति खोते।।
क्षुधा रोग का नाशकर, बने स्वयं के नाथ!
अर्पित यह नैवेद्य पद, झुका रहे हम माथ।।
प्रभु जय-जय हो तुम्हारी।
मैटो मम् अज्ञान, शरण में खड़े पुजारी।।5।।

ॐ ह्रीं आयुकर्म कर्मविनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नामकर्म का नाम शुभ, जानो खोटा काम।
भाँति-भाँति की देह रच, जीना किए हराम।।
जीना किए हराम, बनाते खेल खिलौना।
छोटा-मोटा श्याम गौर, लम्बा तन बौना।।
दीप जलाकर रत्नमय, लाए हम हे नाथ!
मोह अंध का नाश हो, दीजे मेरा साथ।।
प्रभु जय-जय हो तुम्हारी।
मैटो मम् अज्ञान, शरण में खड़े पुजारी।।6।।

ॐ ह्रीं नामकर्म कर्मविनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्च नीच दो भेद हैं, गोत्रकर्म के खास।
नीच गोत्र पावें कभी, कभी उच्च में वास।।
कभी उच्च में वास, बने ऊँचा कुल धारी।
नीच गोत्र को प्राप्त करे, मन में गम भारी।।
अष्ट गंधयुत धूप हम, जला रहे हे नाथ!
अष्ट कर्म का नाश हो, चरण झुका पद माथ।
प्रभु जय-जय हो तुम्हारी।
मैटो मम् अज्ञान, शरण में खड़े पुजारी।।7।।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्म कर्मविनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्न डालता है सदा, कर्म कहा अन्तराय।
दुख देकर के जीव को, आप स्वयं हर्षाय।।
आप स्वयं हर्षाय, दुखी होते हैं प्राणी।
अन्तराय की चाल, सभी की जानी-मानी।।
मोक्षमहाफल प्राप्त हो, शीघ्र हमें हे नाथ!
फल अर्पित करते चरण, झुका रहे हैं माथ।।
प्रभु जय-जय हो तुम्हारी।
मैटो मम् अज्ञान, शरण में खड़े पुजारी।।8।।

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्मविनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टकर्म जग जीव को, भटकाते संसार।
दुख सहते न चाहकर, जग में अपरम्पार।।
जग में अपरम्पार, गति चारों में जाते।
लख चौरासी योनि, में जो सदा भ्रमाते।।
पद अनर्घ अब प्राप्त हो, हमको हे भगवान!
चढ़ा रहे हम अर्घ्य शुभ, पाने पद निर्वाण।।
प्रभु जय-जय हो तुम्हारी।
मैटो मम् अज्ञान, शरण में खड़े पुजारी।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्मविनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमःअनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतिधारा कर रहे, प्रासुक लेकर नीर।
कर्मनाश होवें मेरे, मिट जावे भव पीर।।

शान्तये शांतिधारा....

पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, भाव सुमन ले हाथ।
भक्त शरण में आ पड़े, झुका रहे पद माथ।।

पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्..

जयमाला

दोहा- कर्म दहन के भाव से, करते प्रभु गुणगान।
गाते हैं जयमालिका, चरण शरण में आन।।

(शम्भू छन्द)

काल अनादि से जीवों का, कर्मों से संयोग रहा।
भटक रहे हैं जग के प्राणी, अज्ञानी बन सभी अहा।।
ज्ञानावरणी कर्म ज्ञान पर, पर्दा डाले घूम रहा।
ज्ञानहीन होकर सदियों से, भव-भव में बहु दुःख सहा।।
कर्म दर्शनावरणी जग में, दर्शन गुण का घात करे।
दर्शन गुण की शक्ति प्राणी, जिसके कारण पूर्ण हरे।।
वेदनीय के भेद कहे दो, साता और असाता है।
सुख-दुख का वेदन यह प्राणी, जिनके कारण पाता है।।
मोहनीय से मोहित होकर, सारा जग भरमाता है।
मिथ्या सम्यक् उभय रूप, त्रय दर्शन मोह कहाता है।।
चारित मोह कषाय रूप है, पच्चिस भेद गिनाए हैं।
पर पदार्थ में जग जीवों को, फिरता जो अटकाए है।।
आयु कर्म गति में रोके, स्वर्ग-नरक ले जाता है।
मानव पशु बनाकर जग में, बारम्बार घुमाता है।।
नाम कर्म तन की रचना कर, रूप अनेक बनाता है।
कहे तिरानवे जिसके भाई, भेद शुभाशुभ पाता है।।
उच्च-नीच दो भेद गोत्र के, जैनागम में गाए हैं।
दान लाभ भोगोपभोग शुभ, वीर्यान्तराय कहाए हैं।।
अष्ट कर्म के कारण प्राणी, बहुतक दुःख उठाते हैं।

प्रथम वलयः

(ज्ञानावरणी कर्म विनाशक अर्घ्य)

दोहा- ज्ञानावरणी कर्म का, होवे पूर्ण विनाश।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, करने ज्ञान प्रकाश।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(आर्या छन्द)

मतिज्ञान पर पर्दा डाले, कर्म घातिया जानो।
मति ज्ञानावरणी यह भाई, कर्म इसे पहिचानो।।
इसके कारण से हमने कई, दुःख अनादि पाए।
नाश हेतु वह कर्म प्रभु जी, अर्घ्य चढ़ाने लाए।।1।।

ॐ ह्रीं मति ज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पड़े आवरण श्रुत ज्ञान पर, सम्यक् ज्ञान न होवे।
स्वयं हिताहित की बुद्धि को, प्राणी जग में खोवे।।
इसके कारण से हमने कई, दुःख अनादि पाए।
नाश हेतु वह कर्म प्रभु जी, अर्घ्य चढ़ाने लाए।।2।।

ॐ ह्रीं श्रुत ज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पड़े आवरण अवधि ज्ञान पर, ज्ञान प्रकट न होवे।
अवधि ज्ञान की शक्ति प्राणी, स्वयं आपकी खोवे।।
इसके कारण से हमने कई, दुःख अनादि पाए।
नाश हेतु वह कर्म प्रभु जी, अर्घ्य चढ़ाने लाए।।3।।

ॐ ह्रीं अवधि ज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान मनःपर्यय हे भाई ! प्रकट नहीं हो पावे।
कर्मावरण के कारण मन में, मन की बात न आवे।।

जन्म-मरण करते हैं भव-भव, बारम्बार भ्रमाते हैं।।
दो हैं गंध वर्ण रस बन्धन, पञ्च शरीर और संघात।
छह संस्थान संहनन सुर द्विक्, अगुरुलघु उच्छ्वासोपघात।।
अयश कीर्ति परघात अनादेय, सुस्वर शुभ स्थिर युग जान।
गमन गति द्वय स्पर्शाष्टक, अपर्याप्त वेदनीय मान।।
आंगोपांग तीन दुर्भगयुत, प्रत्येक नीच कुल अरु निर्माण।
सभी बहत्तर उपान्त्य समय में, अयोग केवली के सब जान।।
आनुपूर्वी आदेय इन्द्रियाँ, पंच यशः कीर्ति पर्याप्त।
सुभग उच्चकुल त्रसबादर शुभ, नाश अन्त में बनते आप्त।।
ध्यानाग्नि से कर्म दहनकर, बन जाते केवलज्ञानी।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, दिव्य देशना के दानी।।
सर्व कर्म का नाश किए फिर, शिव पदवी को पाते हैं।
छोड़ असार संसार वास वह, सिद्ध शिला पर जाते हैं।।
यही भावना लेकर आये, हम भी शिव पदवी पावें।
अष्ट कर्म का नाश करें न, भवसागर में भटकावें।।
व्रत संयम का पालन करना, यही हमारा ध्येय रहे।
विशद हृदय की मरुभूमि से, ज्ञानामृत की धार बहे।।

दोहा- कर्म दहन करके विशद, पाएँ मुक्ति वास।
शिवपद हम भी पाएँगे, है पूरा विश्वास।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- कर्म दहन व्रत कर मिले, शिवपद का उपहार।
अक्षय अविनाशी परम, मुक्ति रमा का प्यार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

इसके कारण से हमने कई, दुःख अनादि पाए।
नाश हेतु वह कर्म प्रभु जी, अर्घ्य चढ़ाने लाए।।4।।

ॐ ह्रीं मनःपर्यय ज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक प्रकाशी केवल, ज्ञान प्रकट न होवे।
केवल ज्ञानावरण कर्म यह, उसकी शक्ति खोवे।।
इसके कारण से हमने कई, दुःख अनादि पाए।
नाश हेतु वह कर्म प्रभु जी, अर्घ्य चढ़ाने लाए।।5।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म का भाई, रत्नत्रय है नाशी।
ज्ञान शरीरी बनकर प्राणी, बनते शिवपुर वासी।।
इसके कारण से हमने कई, दुःख अनादि पाए।
नाश हेतु वह कर्म प्रभु जी, अर्घ्य चढ़ाने लाए।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वज्ञानावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

(दर्शनावरणी कर्म विनाशक अर्घ्य)

दोहा- **कर्म दर्शनावर्ण का, करने हेतु विनाश।**
पुष्पाञ्जलि करते प्रभो !, जागी मन में आश।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(शम्भू छन्द)

चक्षु दर्शन हो आँखों से, आगम यह बतलाता है।
चक्षु दर्शनावरण कर्म से, सही देख न पाता है।।
कर्म दर्शनावरणी भगवन्, यहाँ नशाने आये हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण चढ़ाने लाये हैं।।1।।

ॐ ह्रीं चक्षु दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्शादि अन्य इन्द्रियों, से वस्तु का हो आभास।
यही अचक्षु दर्शन जानो, कर्मावरण करे वह नाश।।
कर्म दर्शनावरणी भगवन्, यहाँ नशाने आये हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण चढ़ाने लाये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं अचक्षु दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधि ज्ञान के पूर्व वस्तु का, होवे जो सामान्याभास।
कहा अवधि दर्शन आगम में, कर्मावरण करे जो नाश।।
कर्म दर्शनावरणी भगवन्, यहाँ नशाने आये हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण चढ़ाने लाये हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अवधि दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञान के साथ चराचर, वस्तु का सामान्याभास।
जानो केवल दर्शन भाई, कर्मावरण करे जो ह्रास।।
कर्म दर्शनावरणी भगवन्, यहाँ नशाने आये हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण चढ़ाने लाये हैं।।4।।

ॐ ह्रीं केवल दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा कर्मावरण जीव को, कर देता निद्रा में लीन।
वस्तु तब वह देख न पावे, हो जाता है ज्ञान विहीन।।
कर्म दर्शनावरणी भगवन्, यहाँ नशाने आये हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण चढ़ाने लाये हैं।।5।।

ॐ ह्रीं निद्रा दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा-निद्रा कर्मोदय से, गहरी नींद में सोवे जीव।
प्राणी वस्तु देख न पावें, कर्मास्रव तब करें अतीव।।
कर्म दर्शनावरणी भगवन्, यहाँ नशाने आये हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण चढ़ाने लाये हैं।।6।।

ॐ ह्रीं निद्रा-निद्रा दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रचला कर्मोदय से प्राणी, ऊँघे अरु झपकी लेवें।
घेरे रहती नींद सदा ही, चित् में चित्त नहीं देवें।।
कर्म दर्शनावरणी भगवन्, यहाँ नशाने आये हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण चढ़ाने लाये हैं।।7।।

ॐ ह्रीं प्रचला दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रचला-प्रचला कर्मोदय से, नींद घेरती बहती लार।
बेहोशी सी हालत रहती, दाँत घिसे नर बारम्बार।।
कर्म दर्शनावरणी भगवन्, यहाँ नशाने आये हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरण चढ़ाने लाये हैं।।8।।

ॐ ह्रीं प्रचला-प्रचला दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोते-सोते काम करे कई, नहीं होश में रहता जीव।
सोकर उठता है जब मानव, करता है आश्चर्य अतीव।।
स्त्यानगृद्धि कर्म दर्शनावरणी से, हमने कई दुख पाए।
कर्मों से मुक्ति पाने प्रभु, तव चरणों में सिरनाए।।9।।

ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धि दर्शनावरण कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- कर्म दर्शनावरण का, होवे पूर्ण विनाश।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, पाने निज में वास।। 10।।

ॐ ह्रीं सर्व दर्शनावरण कर्मविनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

(वेदनीय कर्म विनाशक अर्घ्य)

सोरठा- होय कर्म का नाश, वेदनीय का हे प्रभो !
रहे चरण के दास, पुष्पाञ्जलि करते अहा।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(ताटंक छन्द)

कर्म असाता वेदनीय का, जब तक उदय में रहता है।
व्यसनादि भोगों में फँसकर, प्राणी कई दुख सहता है।।
हे प्रभो ! आप सारे जग में, कर्मों के नाशी कहलाए।
अतएव प्रभो हम चरणों में, यह अर्घ्य चढ़ाने को लाए।।1।।

ॐ ह्रीं सातावेदनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनीय साता कर्मोदय, पुण्य के फल से आता है।
धन-वैभव सम्मान कुशलता, प्राणी सब कुछ पाता है।।
हे प्रभो ! आपको साता अरु, कोई भी वैभव न भाए।
अतएव प्रभो हम चरणों में, यह अर्घ्य चढ़ाने को लाए।।2।।

ॐ ह्रीं असातावेदनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- पाए अव्याबाध गुण, वेदनीय को नाश।
निज वैभव को प्राप्त कर, शिवपुर किए निवास।।3।।

ॐ ह्रीं सर्व वेदनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः जलादि पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

(मोहनीय कर्म विनाशक अर्घ्य)

सोरठा- होवे कर्म विनाश, मोहनीय का हे प्रभो !
रहे चरण के दास, पुष्पाञ्जलि करते चरण।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल छन्द)

मिथ्यात्व उदय में आवे, सम्यक्त्व नहीं हो पावे।
न श्रद्धा उर में जागे, विपरीत धर्म से भागे।।

जिन सिद्धों के गुण गाएँ, उर में श्रद्धान् जगाएँ।
अब हमने तुम्हें पुकारा, दो हमको नाथ ! सहारा।।1।।

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व दर्शन मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमःअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्त्व पूर्ण न होवे, मिथ्या शक्ति भी खोवे।
गुड़ दही मिला हो जैसे, इसकी परिणति हो वैसे।।
जिन सिद्धों के गुण गाएँ, उर में श्रद्धान् जगाएँ।
अब हमने तुम्हें पुकारा, दो हमको नाथ ! सहारा।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यक् मिथ्यात्व दर्शन मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व पूर्ण खो जावे, सम्यक्त्व उदय में आवे।
कुछ रहे मलिनता भाई, सम्यक् प्रकृति बतलाई।।
जिन सिद्धों के गुण गाएँ, उर में श्रद्धान् जगाएँ।
अब हमने तुम्हें पुकारा, दो हमको नाथ ! सहारा।।3।।

ॐ ह्रीं सम्यक् प्रकृति दर्शन मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीर छन्द)

क्रोध अनन्तानुबन्धी का, किया आपने पूर्ण विनाश।
मोहनीय कर्मों से पाया, पूर्ण रूप तुमने अवकाश।।
इस जग की माया को लखकर, जाना यह संसार असार।
नाथ ! आपके चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी क्रोध चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान अनन्तानुबन्धी का, पूर्ण रूप से करके नाश।
मार्दव धर्म प्राप्त कर प्रभु ने, कीन्हा सम्यग् ज्ञान प्रकाश।।
इस जग की माया को लखकर, जाना यह संसार असार।
नाथ ! आपके चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी मान चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया अनन्तानुबन्धी का, नाश हुए जो सर्व महान।
आर्जव धर्म प्राप्त कर प्रभु ने, पाया निर्मल सम्यग् ज्ञान।।
इस जग की माया को लखकर, जाना यह संसार असार।
नाथ ! आपके चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी माया चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ अनन्तानुबन्धी का, जिनको रहा न नाम निशान।
उत्तम शौच धर्म के धारी, पाए निर्मल सम्यग् ज्ञान।।
इस जग की माया को लखकर, जाना यह संसार असार।
नाथ आपके ! चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार।।7।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी लोभ चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

क्रोध अप्रत्याख्यान, अणुव्रत का घाती कहा।
नाश किए भगवान, पूज्य हुए हैं लोक में।।8।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान क्रोध चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान अप्रत्याख्यान, को नाशा है आपने।
अतः हुए भगवान, महिमा जिनकी अगम है।।9।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान मान चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मायाप्रत्याख्यान, छल प्रपंच जागृत करे।
जग में हुए महान्, पूर्ण रूप से शांत कर।।10।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान माया चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ अप्रत्याख्यान, न होने दे देशव्रत।
कर कषाय की हान, पाए जिन श्री सिद्ध पद।।11।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान लोभ चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छन्द)

प्रत्याख्यान क्रोध जो होवे, महाव्रतों की क्षमता खोवे।
उसका नाश किए जिन स्वामी, हुए आप तब अन्तर्यामी।।12।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान क्रोध चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान मान के होते, महाव्रतों की शक्ति खोते।
मद की दम को प्रभु नशाए, अर्हत् सिद्ध सुपद को पाए।।13।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान मान चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया प्रत्याख्यान उदय हो, महाव्रतों की शान्ति क्षय हो।
माया की छाया तक नाशी, ज्ञानी आप हुए अविनाशी।।14।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान माया चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान लोभ आ जावे, प्राणी संयम न धर पावे।
प्रत्याख्यान लोभ परिहारी, हुए आप जिन मंगलकारी।।15।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान लोभ चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा छन्द)

यथाख्यात न होय, क्रोध संज्वलन उदय से।
पूर्ण रूप यह खोय, श्री सिद्ध पदवी लहे।।16।।

ॐ ह्रीं संज्वलन क्रोध चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान संज्वलन होय, यथाख्यात न प्राप्त हो।
इसको प्राणी खोय, केवलज्ञानी जिन बने।।17।।

ॐ ह्रीं संज्वलन मान चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथाख्यात न पाय, माया संज्वलन उदय में।
जिनवर इसे नशाय, सिद्ध बने इस लोक में।।18।।

ॐ ह्रीं संज्वलन माया चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ संज्वलन पाय, यथाख्यात न हो कभी।
श्री सिद्धपद पाए, लोभ संज्वलन नाशकर।।19।।

ॐ ह्रीं संज्वलन लोभ चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

जब हास्य उदय में आवे, हँस-हँस प्राणी खिल जावे।
प्रभु हास्य कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी।।20।।

ॐ ह्रीं हास्य चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब रति उदय में आवे, जग से नर प्रीति जगावे।
प्रभु रति कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी।।21।।

ॐ ह्रीं रति चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब अरति उदय में आवे, अप्रीतिभाव जगावे।
प्रभु अरति कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी।।22।।

ॐ ह्रीं अरति चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोइ इष्टानिष्ट दिखावे, मन में तब शोक मनावे।
प्रभु शोक कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी।।23।।

ॐ ह्रीं शोक चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोइ चीज दिखे भयकारी, भय होय उदय में भारी।
भय कर्म नाश कर भाई, प्रभु अर्हत् पदवी पाई।।24।।

ॐ ह्रीं भय चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व-पर गुण दोष दिखावें, मन में ग्लानी उपजावें।
प्रभु कर्म जुगुप्सा नाशी, पद पाए हैं अविनाशी।।25।।

ॐ ह्रीं जुगुप्सा चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो व्याकुल होवे भारी, रमने को खोजे नारी।
प्रभु पुरुष वेद के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी।।26।।

ॐ ह्रीं पुरुष वेद चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुषों में रमती भारी, उसके वेदोदय नारी।
प्रभु स्त्री वेद के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी।।27।।

ॐ ह्रीं स्त्रीवेद चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर-नारी की अभिलाषा, रमने की रखते आशा।
प्रभु वेद नपुंसक नाशी, पद पाए हैं अविनाशी।।28।।

ॐ ह्रीं नपुंसकवेद चारित्र मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोहनीय दुखकारी, प्रभु नाश हुए अविकारी।
प्रभु मोह कर्म के नाशी, पद पाए हैं अविनाशी।।29।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलयः

(आयु कर्म विनाशक अर्घ्य)

दोहा- **आयु कर्म का नाश हो, मेरा हे जिनराज !**
पुष्पाञ्जलि करते चरण, भक्ति भाव से आज।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल छन्द)

स्वर्गों का वैभव पाया, भोगों में समय गँवाया।
आयु हो जावे पूरी, पर आशा रही अधूरी।।
प्रभु आयु कर्म विनाशी, हो गये हैं शिवपुर वासी।
यह कर्म हमारा स्वामी, मेटो हे अन्तर्यामी !।।1।।

ॐ ह्रीं देव आयु कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो दीन हीन दुःख पाया, रोगों ने बहुत सताया।
संयोग वियोग से भारी, मानुष गति रही दुखारी।।
प्रभु आयु कर्म विनाशी, हो गये हैं शिवपुर वासी।
यह कर्म हमारा स्वामी, मेटो हे अन्तर्यामी !।।2।।

ॐ ह्रीं मनुष्य आयु कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षुधा तृषा दुखदायी, बध बन्धन आदिक भाई।
बनके तिर्यञ्च सहे हैं, होके परतन्त्र रहे हैं।।
प्रभु आयु कर्म विनाशी, हो गये हैं शिवपुर वासी।
यह कर्म हमारा स्वामी, मेटो हे अन्तर्यामी !।।3।।

ॐ ह्रीं तिर्यञ्च आयु कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरकों की कथा है न्यारी, बहु दुःख सहे हैं भारी।
बहु कर्म किए दुख पाए, भव-भव में सहते आए।।
प्रभु आयु कर्म विनाशी, हो गये हैं शिवपुर वासी।
यह कर्म हमारा स्वामी, मेटो हे अन्तर्यामी !।।4।।

ॐ ह्रीं नरक आयु कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर पशु गति भटकाए, नरकों के दुःख उठाए।
बध-बन्धन आदिक भारी, पाकर के रहे दुखारी।।
प्रभु आयु कर्म विनाशी, हो गये हैं शिवपुर वासी।
यह कर्म हमारा स्वामी, मेटो हे अन्तर्यामी !।।5।।

ॐ ह्रीं आयु कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठम वलयः

(नाम कर्म विनाशक अर्घ्य)

सोरठा- होवे कर्म विनाश, नाम कर्म मेरा प्रभो !
पाएँ ज्ञान प्रकाश, पुष्पाञ्जलि करते यहाँ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(शम्भू छन्द)

कर्मोदय से नाम कर्म के, नाना भेष बनाए हैं।
नरक गति में जाकर भगवन्, दुःख अनेकों पाए हैं।।

नरक गति जो नाम कर्म है, उसका तुमने नाश किया।
बनकर केवल ज्ञानी प्रभुवर, सम्यग् ज्ञान प्रकाश किया।।1।।

ॐ ह्रीं नरक गति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छेदन भेदन बध बन्धन कई, भूख-प्यास के दुःख सहे।
भार वहन की मायाचारी, बँधते खोटे कर्म रहे।।
पशु गति जो नाम कर्म है, उसका तुमने नाश किया।
बनकर केवल ज्ञानी प्रभुवर, सम्यग् ज्ञान प्रकाश किया।।2।।

ॐ ह्रीं तिर्यञ्च गति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चेन्द्रिय के विषयों का सुख, पाया हमने बारम्बार।
सुख-दुख पाकर रहे भटकते, नहीं मिला हमको भव पार।।
मनुज गति है नाम कर्म शुभ, उसका तुमने नाश किया।
बनकर केवल ज्ञानी प्रभुवर, सम्यग् ज्ञान प्रकाश किया।।3।।

ॐ ह्रीं मनुष्य गति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य सुखों को पाकर भी हम, तृप्त नहीं हो पाए हैं।
देवायु जब पूर्ण हुई तो, बार-बार पछताए हैं।।
देवगति शुभ नाम कर्म है, उसका तुमने नाश किया।
बनकर केवल ज्ञानी प्रभुवर, सम्यग् ज्ञान प्रकाश किया।।4।।

ॐ ह्रीं देव गति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

एक इन्द्री जीव जग में, प्राप्त जो करते सही।
एक इन्द्री जाति उनकी, जैन आगम में कही।।
एक इन्द्री जाति है यह, कर्म दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा।।5।।

ॐ ह्रीं एकेन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक में दो इन्द्रियाँ जो, जीव पाते हैं सही।
जाति दो इन्द्री सभी की, जैन आगम में कही।।
कर्म है यह नाम जाति, तीव्र दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा।।6।।

ॐ ह्रीं द्वि-इन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक में त्रय इन्द्रियाँ जो, जीव पाते हैं सही।
जाति तिय इन्द्री सभी की, जैन आगम में कही।।
कर्म है यह नाम जाति, तीव्र दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा।।7।।

ॐ ह्रीं त्रि-इन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रियाँ हैं चार जिनके, चार इन्द्री वह कहे।
चार इन्द्री जीव जग में, घोर दुखमय जो रहे।।
कर्म है यह नाम जाति, तीव्र दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा।।8।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक में सब इन्द्रियाँ जो, जीव पाते हैं कभी।
जीव संज्ञी अरु असंज्ञी, वह कहे जाते सभी।।
कर्म है यह नाम जाति, तीव्र दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा।।9।।

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रिय जाति नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

जो स्थूल देह को पावे, वह औदारिक तन कहलावे।
परमौदारिक जिनवर पाते, अन्त में छोड़ उसे भी जाते।।10।।

ॐ ह्रीं औदारिक शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अणिमादि ऋद्धि के धारी, रूप बनाते अतिशयकारी।
वैक्रियक तन प्राणी पाते, जिनवर को वह भी न भाते।।11।।

ॐ ह्रीं वैक्रियक शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि के सिर से प्रगटित होवे, जिनपद छूके शंका खोवे।
आहारक यह देह कहावे, जिनवर को यह भी न भावे।।12।।

ॐ ह्रीं आहारक शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में जो कान्ति प्रगटावे, वह शरीर तैजस कहलावे।
भेद शुभाशुभ इसके गाये, जिनवर को यह भी न भाये।।13।।

ॐ ह्रीं तैजस शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म जहाँ मिल जावें, ये ही कार्माण देह बनावें।
उसका नाश किए जिन स्वामी, बने प्रभु जी अन्तर्यामी।।14।।

ॐ ह्रीं कार्माण शरीर नाम कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल-टप्पा)

हाथ-पैर दो कमर पीठ अरु, हृदय शीश जानो।
आठ अंग यह लघु उपांग कई, तन में पहिचानो।।
सभी यह आगम से जानो।
आंगोपांग औदारिक तन से, रहित सिद्ध मानो-सभी।।15।।

ॐ ह्रीं औदारिक आंगोपांग नाम कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृहद देह के हिस्से को ही, अंग सभी जानो।
कर्मोदय से मिले जीव को, ऐसा तुम मानो।।
सभी यह आगम से जानो।
आंगोपांग वैक्रियक तन से, रहित सिद्ध मानो–सभी।।16।।

ॐ ह्रीं वैक्रियक आंगोपांग नाम कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाक कान उँगली आदि को, तुम उपांग जानो।
कर्मोदय से शुभम् जीव को, मिले सभी मानो।।
सभी यह आगम से जानो।
आंगोपांग आहारक तन से, रहित सिद्ध मानो–सभी।।17।।

ॐ ह्रीं आहारक आंगोपांग नाम कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिल्पकार सम तन की रचना, करता यह जानो।
नाम कर्म निर्माण कहा यह, भाई पहिचानो।।
सभी यह आगम से जानो।
दुःखकारी इस नाम कर्म से, रहित सिद्ध मानो–सभी।।18।।

ॐ ह्रीं निर्माण नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धरि छन्द)

हो जोड़ ईंट गारा समान, बन्धन औदारिक वही जान।
करके तन बन्धन का विनाश, शिवपुर में करते सिद्ध वास।।19।।

ॐ ह्रीं औदारिक शरीर बंधन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैक्रियक तन में कई भेष, है नाम कर्म बन्धन विशेष।
करके तन बन्धन का विनाश, शिवपुर में करते सिद्ध वास।।20।।

ॐ ह्रीं वैक्रियक शरीर बंधन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहारक बन्धन है महान्, न होता है जो दृश्यमान।
करके तन बन्धन का विनाश, शिवपुर में करते सिद्ध वास।।21।।

ॐ ह्रीं आहारक शरीर बंधन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में होवे जो कांतिमान, शुभ अशुभ रूप तैजस महान्।
करके तन बन्धन का विनाश, शिवपुर में करते सिद्ध वास।।22।।

ॐ ह्रीं तैजस शरीर बंधन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अब नामकर्म कार्माण जान, बन्धन कर्मों का यही मान।
करके तन बन्धन का विनाश, शिवपुर में करते सिद्ध वास।।23।।

ॐ ह्रीं कार्माण शरीर बंधन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

करे छिद्र बिन देह को, नाम कर्म संघात।
औदारिक तन का किए, सिद्ध प्रभु भी घात।।24।।

ॐ ह्रीं औदारिक शरीर संघात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरक स्वर्ग में कर्म हो, वैक्रियक संघात।
सिद्ध प्रभु जी कर दिए, इसका क्षण में घात।।25।।

ॐ ह्रीं वैक्रियिक शरीर संघात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहारक शुभ देह में, आहारक संघात।
सिद्ध प्रभु जी कर दिए, नाम कर्म का घात।।26।।

ॐ ह्रीं आहारक शरीर संघात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तैजस कांति देह में, देवे अपरम्पार।
नाम कर्म तेजस प्रभु, नाश हुए भव पार।।27।।

ॐ ह्रीं तैजस शरीर संघात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देह कार्माण को करे, छिद्र रहित संघात।
अष्ट कर्म का कर दिए, सिद्ध प्रभु जी घात।।28।।

ॐ ह्रीं कार्माण शरीर संघात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द : मोतियादाम)

बने कर्मोदय से आकार, देह का भाई विविध प्रकार।
रहे सुन्दर जो श्रेष्ठ महान, कहा वह सम चतुःसंस्थान।।
हुए हैं इससे सिद्ध विहीन, रहे निज आतम में लवलीन।
लगाए हैं हम भी यह आस, हमारा हो शिवपुर में वास।।29।।

ॐ ह्रीं समचतुस्र संस्थान नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देह नीचे की पतली जान, रहे ऊपर स्थूल महान्।
कहा न्यग्रोध यही संस्थान, रहा जो बरगद पेड़ समान।।
हुए हैं इससे सिद्ध विहीन, रहे निज आतम में लवलीन।
लगाए हैं हम भी यह आस, हमारा हो शिवपुर में वास।।30।।

ॐ ह्रीं न्यग्रोध परिमंडल संस्थान नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देह ऊपर की पतली जान, बने नीचे स्थूल महान्।
कहा ऐसा स्वाती संस्थान, किया आगम में यही बखान।।
हुए हैं इससे सिद्ध विहीन, रहे निज आतम में लवलीन।
लगाए हैं हम भी यह आस, हमारा हो शिवपुर में वास।।31।।

ॐ ह्रीं स्वाती संस्थान नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीठ में हो ऊँचा स्थान, बना कूबड़ हो बड़ा महान्।
कहा कुब्जक ये ही संस्थान, किया आगम में यही बखान।।
हुए हैं इससे सिद्ध विहीन, रहे निज आतम में लवलीन।
लगाए हैं हम भी यह आस, हमारा हो शिवपुर में वास।।32।।

ॐ ह्रीं कुब्जक संस्थान नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राप्त बोना हो जिसे शरीर, रखे फिर भी मन में वह धीर।
कहाए वह बामन संस्थान, किया आगम में यही बखान।।
हुए हैं इससे सिद्ध विहीन, रहे निज आतम में लवलीन।
लगाए हैं हम भी यह आस, हमारा हो शिवपुर में वास।।33।।

ॐ ह्रीं बामन संस्थान नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे टेड़ा-मेड़ा आकार, देह का भाई विविध प्रकार।
इसे कहते हुण्डक संस्थान, किया आगम में यही बखान।।
हुए हैं इससे सिद्ध विहीन, रहे निज आतम में लवलीन।
लगाए हैं हम भी यह आस, हमारा हो शिवपुर में वास।।34।।

ॐ ह्रीं हुण्डक संस्थान नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वीर छंद)

हड्डी की मजबूती को ही, कहते हैं जिनवर संहनन।
वज्रमयी हड्डी कीलें हों, वज्र मयी होवे वेस्टन।।
वज्र वृषभ नाराच संहनन, पाकर हुए प्रभु अर्हन्।
कर्म नाशकर शिवपुर पाया, तव चरणों में करें नमन।।35।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभ नाराच संहनन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हाड़ कील तो वज्रमयी हों, नहीं वज्र का हो वेस्टन।
मोक्ष नहीं जाते यह पाकर, वज्र नाराच कहा संहनन।।
संहनन रहित सिद्ध प्रभु हैं, ऐसा करो परम चिन्तन।
कर्म नाशकर शिवपुर पाया, तव चरणों में करें नमन।।36।।

ॐ ह्रीं वज्रनाराच संहनन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हाड़ देह के वज्रमयी हों, कील वज्र की न वेस्टन।
नाम कर्म की बलिहारी है, यह नाराच कहा संहनन।।
संहनन रहित सिद्ध प्रभु हैं, ऐसा करो परम चिन्तन।
कर्म नाशकर शिवपुर पाया, तव चरणों में करें नमन।।37।।

ॐ ह्रीं नाराच संहनन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हाड़ अर्द्ध कीलित हों तन के, अर्द्ध नाराच कहा संहनन।
कर्मोदय से नाम कर्म के, पाते प्राणी ऐसा तन।।
संहनन रहित सिद्ध प्रभु हैं, ऐसा करो परम चिन्तन।
कर्म नाशकर शिवपुर पाया, तव चरणों में करें नमन।।38।।

ॐ ह्रीं अर्द्धनाराच संहनन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहें हड्डियाँ कीलित तन में, कीलक कहलाए संहनन।
कीलक नाम कर्म से प्राणी, पाते हरदम ऐसा तन।।
संहनन रहित सिद्ध प्रभु हैं, ऐसा करो परम चिन्तन।
कर्म नाशकर शिवपुर पाया, तव चरणों में करें नमन।।39।।

ॐ ह्रीं कीलक संहनन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बँधी हुई हो नशें हड्डियाँ, कहलाता है ऐसा तन।
कहा सृपाटिक असंप्राप्ता, प्राणी का ऐसा संहनन।।
संहनन रहित सिद्ध प्रभु हैं, ऐसा करो परम चिन्तन।
कर्म नाशकर शिवपुर पाया, तव चरणों में करें नमन।।40।।

ॐ ह्रीं असंप्राप्ता सृपाटिका संहनन नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

है नाम कर्म दुःखदायी, स्पर्श शीत हो भाई।
प्रभु सिद्ध कर्म के नाशी, चिद्रूपी ज्ञान प्रकाशी।।41।।

ॐ ह्रीं शीत स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श उष्ण भी जानो, यह भी दुःखदायी मानो।
सिद्धों ने कर्म विनाशे, फिर आतम ज्ञान प्रकाशे।।42।।

ॐ ह्रीं उष्ण स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श लघु पहिचानो, आस्रव का हेतु मानो।
हैं सिद्ध प्रभु अविनाशी, आठों कर्मों के नाशी।।43।।

ॐ ह्रीं लघु स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श कहा है भारी, है कर्मों की बलिहारी।
जिन सिद्धों को हम ध्याएँ, उनके ही गुण को पाएँ।।44।।

ॐ ह्रीं गुरु स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श कठिन हो भाई, यह नाम कर्म दुखदायी।
होते हैं सिद्ध विनाशी, फिर बनते हैं अविनाशी।।45।।

ॐ ह्रीं कठिन स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श नरम सुखदायी, लगता लोगों को भाई।
सिद्धों ने कर्म विनाशे, फिर आतम ज्ञान प्रकाशे।।46।।

ॐ ह्रीं नरम स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श रुक्ष भी गाया, जो नाम कर्म कहलाया।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी, चिद्रूप अमल अविनाशी।।47।।

ॐ ह्रीं रुक्ष स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिक्कड़ स्पर्श बखाना, यह जैनागम से माना।
सिद्धों ने कर्म विनाशे, निज आतम ज्ञान प्रकाशे।।48।।

ॐ ह्रीं स्निग्ध स्पर्श नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा छन्द)

पावें खट्टा स्वाद, नाम कर्म के उदय से।
नाश कर्म के बाद, बन जाते हैं सिद्ध जिन।।49।।

ॐ ह्रीं अम्ल रस नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावें मीठा स्वाद, नाम कर्म के उदय से।
रखना भाई याद, नाश किए मुक्ति मिले।।50।।

ॐ ह्रीं मिष्ठ रस नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कटुक प्राप्त हो स्वाद, उदय कर्म यदि नाम हो।
होता है आह्लाद, सिद्धों का अतिशय विशद।।51।।

ॐ ह्रीं कटुक रस नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वाद कषायला प्राप्त, नाम कर्म के उदय से।
बने नाश कर आप्त, पार होय संसार से।।52।।

ॐ ह्रीं कषायला रस नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिक्त स्वाद के साथ, प्राणी जीवें लोक में।
बनें लोक के नाथ, नाम कर्म को नाश कर।।53।।

ॐ ह्रीं तिक्त रस नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावे जीव सुगन्ध, नाम कर्म के उदय से।
माने कुछ आनन्द, सिद्ध हीन उससे रहे।।54।।

ॐ ह्रीं सुगन्ध नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाते हैं दुर्गन्ध, कर्मोदय से नाम के।
नाश किए प्रभु गंध, सिद्ध बने परमात्मा।।55।।

ॐ ह्रीं दुर्गन्ध नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल-टप्पा)

कर्मोदय से नाम कर्म के, श्याम रंग भाई।
इस जग के सब प्राणी पाते, जो है दुखदायी।।
कहा है आगम में भाई।
सिद्धों ने यह कर्म नाश कर, मुक्ति श्री पाई।।56।।

ॐ ह्रीं श्याम वर्ण नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नीले रंग में रागादि है, अतिशय दुखदाई।
कर्मोदय से नाम कर्म के, मिलता है भाई।।
कहा है आगम में भाई।
सिद्धों ने यह कर्म नाश कर, मुक्ति श्री पाई।।57।।

ॐ ह्रीं नील वर्ण नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय से नाम कर्म के, पीत रंग भाई।
प्राणी पाते हैं इस जग में, अतिशय दुखदायी।।
कहा है आगम में भाई।
सिद्धों ने यह कर्म नाश कर, मुक्ति श्री पाई।।58।।

ॐ ह्रीं पीत वर्ण नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाल रंग में रागादि से, आस्रव हो भाई।
नाम कर्म के कारण पाते, प्राणी दुखदायी।।
कहा है आगम में भाई।
सिद्धों ने यह कर्म नाश कर, मुक्ति श्री पाई।।59।।

ॐ ह्रीं लाल वर्ण नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत वर्ण की महिमा जग में, मुनियों ने गाई।
कारण रागादि आस्रव का, होवे दुखदायी।।

कहा है आगम में भाई।
सिद्धों ने यह कर्म नाशकर, मुक्ति श्री पाई।।60।।

ॐ ह्रीं शुक्ल वर्ण नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

मरण करें नर पशु लोक के, नरक गति जब जाते हैं।
विग्रह गति में पूर्व देह की, आकृति प्राणी पाते हैं।।
यही नरक गत्यानुपूर्वी, इसका करते प्रभु विनाश।
बनकर केवलज्ञानी भगवन्, करते सम्यग् ज्ञान प्रकाश।।61।।

ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्वी नामकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्गति के जीव मरण कर, पशु गति जब पाते हैं।
विग्रह गति में पूर्व देह सम, आकृति में ही जाते हैं।।
यह तिर्यंच गत्यानुपूर्वी, इसका करते प्रभु विनाश।
बनकर केवलज्ञानी भगवन्, करते सम्यग् ज्ञान प्रकाश।।62।।

ॐ ह्रीं तिर्यंचगत्यानुपूर्वी नामकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्गति के जीव मरण कर, मानव गति जब पाते हैं।
पूर्व देह सम विग्रह गति की, आकृति में ही जाते हैं।।
यह मनुष्य गत्यानुपूर्वी, इसका करते प्रभु विनाश।
बनकर केवलज्ञानी भगवन्, करते सम्यग् ज्ञान प्रकाश।।63।।

ॐ ह्रीं मनुष्य गत्यानुपूर्वी नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मरण करें नर पशु लोक में, देव गति जब पाते हैं।
पूर्व देह सम विग्रह गति के, आकृति में ही जाते हैं।।
यह कही देव गत्यानुपूर्वी, इसका करते प्रभु विनाश।
बनकर केवलज्ञानी भगवन्, करते सम्यग् ज्ञान प्रकाश।।64।।

ॐ ह्रीं देव गत्यानुपूर्वी नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज : नित देव मेरी...)

आक तूल सम नहीं हल्का, लोह सम भारी नहीं।
वह अगुरुलघु है कर्म भाई, जीव तन पावें कहीं।।
अब सिद्ध जिन को पूजकर, हो मोक्ष पथ मेरा गमन।
हों नाश मेरे कर्म सारे, है चरण शत् शत् नमन।।65।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघु नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज घात निज के अंग से हो, कर्म वह उपघात है।
अरिहन्त भी यह नाश करते, सिद्ध की क्या बात है।।
अब सिद्ध जिन को पूजकर, हो मोक्ष पथ मेरा गमन।
हों नाश मेरे कर्म सारे, है चरण शत् शत् नमन।।66।।

ॐ ह्रीं उपघात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो घात पर का शस्त्र से या, अग्नि से विष से जहाँ।
परघात जानो कर्म यह तुम, चैन न मिलता वहाँ।।
अब सिद्ध जिन को पूजकर, हो मोक्ष पथ मेरा गमन।
हों नाश मेरे कर्म सारे, है चरण शत् शत् नमन।।67।।

ॐ ह्रीं परघात नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उष्ण किरणें सूर्य सम हैं, मूल में जो शीत हैं।
कर्म यह दुखकर जगत में, न किसी का मीत हैं।।
कर्म है यह नाम आतप, तीव्र दुखदायी महा।
नाशकर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा।।68।।

ॐ ह्रीं आतप नामकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रमा सम शीत किरणें, मूल में भी शीत हैं।
कर्म यह दुखकर जगत में, न किसी का मीत हैं।।

कर्म है यह नाम आतप, तीव्र दुखदायी महा।
नाश कर जिनराज मंगल, सौख्य पाते हैं अहा।।69।।

ॐ ह्रीं उद्योत नामकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्छ्वास निःस्वास मिलता, कर्म के फल से अहा।
घन घात कर्मों का अनादि, से स्वयं हमने सहा।।
अब सिद्ध जिन को पूजकर, हो मोक्ष पथ मेरा गमन।
हों नाश मेरे कर्म सारे, है चरण शत् शत् नमन।।70।।

ॐ ह्रीं उच्छ्वास नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गमन हो आकाश में शुभ, गति शुभ विहायस् कही।
उदय से प्राणी जगत के, प्राप्त करते हैं सही।।
अब सिद्ध जिन को पूजकर, हो मोक्ष पथ मेरा गमन।
हों नाश मेरे कर्म सारे, है चरण शत् शत् नमन।।71।।

ॐ ह्रीं प्रशस्त विहायोगति नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गमन प्राणी टेड़ा-मेड़ा, कर्म के कारण सभी।
अशुभ विहायोगति जानो, कर्म बन्धन हो तभी।।
अब सिद्ध जिन को पूजकर, हो मोक्ष पथ मेरा गमन।
हों नाश मेरे कर्म सारे, है चरण शत् शत् नमन।।72।।

ॐ ह्रीं अप्रशस्त विहायोगति नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू-छन्द)

जीव एक तन पाने वाला, एक रहे जिसका स्वामी।
नामकर्म प्रत्येक कहा यह, कहते हैं अन्तर्यामी।।
कर्म नाश यह किया प्रभु ने, तीन लोक में हुए महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भावसहित करते गुणगान।।73।।

ॐ ह्रीं प्रत्येक नामकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक देह को पाने वाले, हैं अनेक जिसके स्वामी।
नामकर्म साधारण है यह, कहते जिन अन्तर्यामी।।
कर्म नाश यह किया प्रभु ने, तीन लोक में हुए महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, भावसहित करते गुणगान।।74।।

ॐ ह्रीं साधारण नामकर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

द्वि इन्द्रिय आदि जीव आगम, में कहे हैं त्रस सभी।
जो उदय से त्रस कर्म के फल, भोगते तन पा अभी।।
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें।।75।।

ॐ ह्रीं त्रस नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पृथ्वी आदि देह पाते, लोक में प्राणी अहा।
वह कर्मफल से रहे स्थिर, अतः स्थावर कहा।।
अब कर्म का हो नाश मेरा, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें।।76।।

ॐ ह्रीं स्थावर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग जीव जो रोके रुके न, लोक में कोई कभी।
वह नाम कर्म कहे गये हैं, सूक्ष्म आगम में सभी।।
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें।।77।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्म नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग जीव जो रोके रुके, स्थूल उनको जानिए।
कर्मोदय से नाम होते, सभी यह पहिचानिए।।

अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें।।78।।

ॐ ह्रीं स्थूल नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पूर्णता की शक्ति पावें, देह में अपनी अहा।
पर्याप्त है यह कर्म भाई, जैन आगम में कहा।।
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें।।79।।

ॐ ह्रीं पर्याप्त नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पूर्णता की शक्ति अपनी, देह में पाते नहीं।
वे कर्मोदय से नाम के, अपर्याप्त कहलाते वहीं।।
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें।।80।।

ॐ ह्रीं अपर्याप्त नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धातु अरु उपधातु जिसकी, देह में स्थिर रहे।
वह नाम कर्म स्थिर कहा है, घात तन में कई सहे।।
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें।।81।।

ॐ ह्रीं स्थिर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस देह में धातु तथा, उपधातु स्थिर न रहे।
कष्ट अस्थिर नाम से कई, जीव तन में भी सहे।।
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें।।82।।

ॐ ह्रीं अस्थिर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय से देह में, अवयव बने सुन्दर सभी।
शुभ कर्म भाई नाम है वह, पुण्य से मिलता कभी।।
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें।।83।।

ॐ ह्रीं शुभ नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस देह के अवयव सभी, सुन्दर नहीं बनते कभी।
वह कर्म जानो अशुभ भाई, लोक में अपना सभी।।
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें।।84।।

ॐ ह्रीं अशुभ नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग जीव का तन देख करके, प्रीति करते हैं सभी।
वह कर्म भाई सुभग जानो, अप्रीति न धारें कभी।।
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें।।85।।

ॐ ह्रीं सुभग नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणगान से भी जीव जग के, प्रीति न धारें कभी।
यह कर्म दुर्भग कहा भाई, सत्य यह मानो सभी।।
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें।।86।।

ॐ ह्रीं दुर्भग नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी मधुर हो जीव की, वह कर्म सुस्वर जानिए।
हो कर्मोदय से प्राप्त भाई, सत्य यह पहिचानिए।।

अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें।।87।।

ॐ ह्रीं सुस्वर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी मधुर न जीव की हो, कर्म दुस्वर है कहा।
यह कर्मोदय से नाम के, प्राणी सदा पाता रहा।।
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें।।88।।

ॐ ह्रीं दुस्वर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो देह में शुभ कांति अनुपम, कर्म वह आदेय है।
संसार धारी प्राणियों को, कहा जो उपादेय है।।
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें।।89।।

ॐ ह्रीं आदेय नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हों वर्ण नख मुख रुक्ष सारे, देह में कांति नहीं।
अनादेय जानो कर्म यह तुम, श्रेष्ठ हो कोई नहीं।।
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें।।90।।

ॐ ह्रीं अनादेय नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणहीन का भी सुयश भारी, फैलता शुभ कर्म से।
यह यश कीर्ति कर्म जानो, प्राप्त होता धर्म से।।
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें।।91।।

ॐ ह्रीं यशःकीर्ति नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणवान का भी सुयश भाई, लोक में होवे नहीं।
अयशः कीर्ति कर्मोदय से, जन्म ले कोई कहीं।।
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें।।92।।

ॐ ह्रीं अयशःकीर्ति नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवली के द्वय चरण में, जीव सम्यक्त्वी अहा।
हो बन्ध तीर्थंकर प्रकृति का, शास्त्र में ऐसा कहा।।
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें।।93।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म है यह नाम भाई, बंध का आधार है।
दुःख पाता जीव जग में, नहीं जिसका पार है।।
अब कर्म का हो नाश मेरे, ज्ञान के दीपक जलें।
हम सिद्ध पद पावें स्वयं ही, मोक्ष मारग पर चलें।।94।।

ॐ ह्रीं सर्व नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम वलयः

(गोत्र कर्म विनाशक अर्घ्य)

दोहा– **गोत्र कर्म का नाश कर, हुए धर्म के ईश।**
पुष्पाञ्जलि करते विशद, चरण झुकाते शीश।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(शम्भू छन्द)

स्व-पर निन्दा और प्रशंसा, करते जो जग के प्राणी।
लघु वृत्ति से उच्च गोत्र हो, ऐसा कहती जिनवाणी।।

गोत्र कर्म के नाश हेतु अब, सिद्धों को हम ध्याते हैं।
विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं उच्च गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर निन्दा अरु आत्म प्रशंसा, करते जो जग के प्राणी।
नीच गोत्र का आस्रव करते, ऐसा कहती जिनवाणी।।
गोत्र कर्म के नाश हेतु अब, सिद्धों को हम ध्याते हैं।
विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं नीच गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्च नीच ये भेद गोत्र के, आगम में बतलाए हैं।
झूला की भाँति हम झूले, बहुतक कष्ट उठाए हैं।।
गोत्र कर्म के नाश हेतु अब, सिद्धों को हम ध्याते हैं।
विशद भाव से अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं उच्च-नीच गोत्र कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वलयः

(अन्तराय कर्म विनाशक अर्घ्य)

सोरठा- किए कर्म का नाश, अन्तराय जिन देव जी।
आतम किए प्रकाश, पुष्पों से हम पूजते।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

दोहा- दाता देना चाहते, दे न पावे दान।
अन्तराय यह दान है, नाश किए भगवान।।1।।

ॐ ह्रीं दानान्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लेना चाहे लाभ जो, ले न पावे दान।
अन्तराय यह लाभ है, नाश किए भगवान।।2।।

ॐ ह्रीं लाभान्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोग भोगना चाहते, भोग सकें न भोग।
अन्तराय यह भोग है, मैटे प्रभु यह रोग।।3।।

ॐ ह्रीं भोगान्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाह रहे उपभोग कई, मिले नहीं उपभोग।
अन्तराय उपभोग भी, मैटे जिन यह रोग।।4।।

ॐ ह्रीं उपभोगान्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय से वीर्य की, प्राणी करते हान।
यही वीर्य अन्तराय है, नाश किए भगवान।।5।।

ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पंच भेद बतलाए हैं, अन्तराय के खास।
आतम शक्ति हो प्रकट, होवें कर्म विनाश।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व अन्तराय कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवम वलयः

(सिद्धों के 8 मूलगुण)

सोरठा- किए कर्म का नाश, अन्तराय जिन देव जी।
आतम किए प्रकाश, पुष्पों से हम पूजते।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, प्रभु ने पाया ज्ञान अनंत।
द्रव्य चराचर एक साथ ही, जाने आप अनंतानंत।।
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आश लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए।।1।।

ॐ ह्रीं अनंतज्ञानगुणप्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरणी नाशा, दर्शन पाए आप अनंत।
द्रव्य चराचर एक साथ ही, जाने आप अनंतानंत।।
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए।।2।।

ॐ ह्रीं अनंतदर्शनगुणप्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनीय का नाश किए फिर, पाए अव्याबाध स्वरूप।
परम सिद्ध परमेष्ठी जिन के, पद में झुकते हैं शत् भूप।।
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए।।3।।

ॐ ह्रीं अव्याबाधत्वगुणप्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय मोहित करता है, उसका भी जो घात किए।
परम सिद्ध परमेष्ठी बनकर, सुख अनंत को प्राप्त किए।।
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए।।4।।

ॐ ह्रीं अनंतसुखगुणप्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु कर्म के भेद चार हैं, उसका आप विनाश किए।
अवगाहन गुण पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश किए।।
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए।।5।।

ॐ ह्रीं अवगाहनत्वगुणप्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नामकर्म के भेद अनेकों, उनका प्रभु विनाश किए।
सूक्ष्मत्व सुगुण प्रगटाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश किए।।

भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए।।6।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वगुणप्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्र कर्म से जग के प्राणी, उच्च नीच पद पाते हैं।
अगुरुलघु गुण गोत्र कर्म के, नाश किए प्रगटाते हैं।।
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए।।7।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वगुणप्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतराय कर्मों का कर्त्ता, विघ्न डालता कई प्रकार।
वीर्यानन्त के धारी जिनको, वंदन मेरा बारम्बार।।
भक्त चरण में आये भगवन्, भक्ति की शुभ आस लिए।
कर्म नाश अब होंगे मेरे, आये हैं विश्वास लिए।।8।।

ॐ ह्रीं अनंतवीर्यत्वगुणप्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सिद्धों के हैं आठ गुण, सिद्ध शिला पर वास।
जिन सिद्धों को पूजकर, पाएँ मोक्ष निवास।।

ॐ ह्रीं अष्टगुणप्राप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य- ॐ ह्रीं ज्ञानावरणादि अष्टकर्म विनाशक श्री सिद्धाय नमः।

जयमाला

दोहा- नित्य निरंजन आप हो, अविनाशी अविकार।
जयमाला गाते विशद, पाने को भव पार।।

शम्भू छन्द

गुण गाने को सिद्ध प्रभु के, अर्पित है मेरा जीवन।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, सिद्धों के पद में वन्दन।।

काल अनादि से कर्मों ने, हमको बहुत सताया है।
चतुर्गति में भ्रमण किया बहु, पार नहीं मिल पाया है।।
ज्ञानदर्शनावरण वेदनीय, अन्तराय की तुम जानो।
त्रिंशत कोड़ा-कोड़ी सागर, स्थिति भाई पहिचानो।।
नीच गोत्र की बीस-बीस है, मोहनीय की सत्तर जान।
तैंतिस सागर आयु कर्म की, जानो यह उत्कृष्ट प्रधान।।
वेदनीय बारह मुहूर्त्त की, नाम गोत्र की जानो आठ।।
अन्तर्मुहूर्त शेष कर्मों की, स्थिति का आता है पाठ।
मध्यम के हैं भेद अनेकों, जिसका नहीं है कोई प्रमाण।
बार-बार पाकर दुःख भोगे, नहीं हुआ आतम कल्याण।।
रत्नत्रय को पाकर प्रभु ने, तीन योग से करके ध्यान।
पूर्ण नाशकर मोहनीय को, सुख अनन्त पाए भगवान।।
ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, प्रकट किया है केवलज्ञान।
कर्म दर्शनावरणी नाशा, केवल दर्शन जगा महान।।
अन्तराय का अन्त किए जिन, वीर्यानन्त प्रकाश किया।
अनन्त चतुष्टय पाकर प्रभु ने, निज आतम में वास किया ।।
इन्द्रों द्वारा रचना होती, समवशरण की अपरम्पार।
शीश झुकाकर वन्दन करते, प्राणी चरणों बारम्बार।।
आयु कर्म के साथ नाम अरु, गोत्र वेदनीय करते नाश।
नित्य निरंजन शुभ अविनाशी, करते हैं चेतन में वास।।
अगुरुलघु सूक्ष्मत्व प्राप्त कर, पाते हैं गुण अव्याबाध।
अवगाहन गुण में अवगाहन, करके पाते हैं आह्लाद।।

अन्तिम देह त्याग कर अपनी, क्षण में बन जाते हैं सिद्ध।
लोक शिखर पर प्रभु विराजे, अशरीरी हो जगत प्रसिद्ध।।
आवागमन नाशकर प्रभु जी, बनते अविनाशी अविकार।
वर्णन करना बड़ा कठिन है, जिनकी महिमा अपरम्पार।।
तीन लोक के नाथ कहे जो, करुणाकर करुणाधारी।
भक्ति भाव से ध्यान करे जो, बन जाता है अविकारी।।
भाव बनाकर आये हैं हम, तव पद को पाने हे नाथ !
विशद भाव से वन्दन करते, चरणों झुका रहे हम माथ।।

(छन्द : घत्तानन्द)

जय-जय अविकारी, आनन्दकारी, मोक्ष महल के अधिकारी।
जय मंगलकारी, हे गुणधारी ! भव बाधा पीड़ा हारी।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- बने प्रभु जी सिद्ध, अष्ट कर्म को नष्ट कर।
जग में हुए प्रसिद्ध, जिनको हम ध्याते अहा।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सोरठा- कर्म दहन का जाप, पूजा और विधान कर।
विधि से करना आप, ऋद्धि सिद्धि हो मोक्ष की।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

***‹T>Ho$ Omo lmO g{V`m| H$s, {deX dh Mra H$hbmEŸ&
H$ao ajm Omo XrZm| H$s, Ohm± _| dra H$hbmEŸ&&
OrVH$a Am¡a H$mo H$moB©, Zht _hmdra ~Z nmVoŸ&
ñd`§ H$mo OrV bo BÝgmZ, "{deX' _hmdra H$hbmEŸ&&***

प्रशस्ति

दोहा

भारत देश के मध्य में, मध्यप्रदेश है नाम।
श्योपुर जिला विशेष है, साधर्मी का ग्राम।।1।।
दश से पन्द्रह फरवरी, हुआ पंचकल्याण।
कर्मदहन पूरा किया, लिखकर वहाँ विधान।।2।।
फाल्गुन कृष्णा पंचमी, शनिवार की शाम।
लेखन पूरा कर विशद, जिन पद किया प्रणाम।।3।।
फैला है बहु लोक में, कर्मों का यह जाल।
सुख-दुःख पाकर जीव यह, होता है बेहाल।।4।।
अष्ट कर्म को नाशकर, जीव हुए कई सिद्ध।
शिवपुर के वासी हुए, तीनों लोक प्रसिद्ध।।5।।
आठों कर्म विनाश हों, व्रत का किया विधान।
पूजा-अर्चा कर करें, जिनवर का गुणगान।।6।।
जाप सहित जिन गुणों की, पूजा करें त्रिकाल।
सुख-शांति सौभाग्य पा, होवें मालामाल।।7।।
व्रत-उद्यापन हेतु यह, लिक्खा श्रेष्ठ विधान।
कर्मदहन शुभ नाम है, जग में रहा महान्।।8।।
लेखक का शुभ भाव है, शब्द हैं मंगल रूप।
पूजन का आधार यह, भविजन के अनुरूप।।9।।
श्री जिन के आशीष से, पाया जो भी ज्ञान।
उसका ही संक्षेप में, किया गया गुणगान।।10।।
कवि नहीं वक्ता नहीं, मैं हूँ लघु आचार्य।
विशद धर्म युत आचरण, करें जगत् जन आर्य।।11।।
माँ जिनवाणी की कृपा, वर्षे दिन अरु रात।
ज्ञान ध्यान की क्यारियाँ, फूलें-फलें प्रभात।।12।।
पूजा के फल से सभी, होते कर्म विनाश।
सर्व कर्म का नाश हो, होवे आत्म प्रकाश।।13।।

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैंॐ
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननॐ

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौष्ट् इति आह्वनन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंस होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं॥

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैं॥

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं॥

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाल॥

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥

आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षायाङ्क
in vkpk;Z izfr"Bk dk 'kqHk]
nks gtkj lu~ ik¡p jgkA
rsjg Qjojh calr iapeh] cus xq#
vkpk;Z vgkAA
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरतेङ्क
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहतीङ्क
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना हैङ्क
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जानाङ्क
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करेंङ्क
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करेंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।

मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क

इत्याशीर्वाद (पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर